भागीरथपुरा में डर का साया, हर नल पर शक, फैली बीमारी

▶ गंदे पानी से बिगड़े हालात, गलियों में पसरा सन्नाटा

नव भारत टीम

इंदौर. भागीरथपुरा में हालात सामान्य नहीं हैं. जिस पानी से प्यास बुझाई जाती थी, उसी पानी को लेकर अब हर घर में डर है. नल खुलते ही लोग झिझक रहे हैं. कई परिवारों ने पानी भरना बंद कर दिया है, तो कहीं बोतलबंद और उबले पानी का सहारा लिया जा रहा है. गंदे पानी से फैली बीमारी ने पूरे इलाके की दिनचर्या बदल दी है.

बीते कुछ दिनों में अचानक उल्टी दस्त, पेट दर्द और तेज कमजोरी की शिकायतें बढ़ीं. कई घरों में एक से ज्यादा सदस्य बीमार पड़े. किसी के घर बुजुर्ग अस्पताल में हैं, तो कहीं छोटे बच्चों को ड्रिप चढ़ रही है. गलियों में रोजमर्रा की चहल पहल कम हो गई है और लोगों की बातचीत का एक ही विषय है पानी सुरक्षित है या नहीं. पूरे भागीरथपुरा में अब स्वास्थ्य विभाग की टीमें लगातार इलाके में घूम रही हैं. घर-घर सर्वे किए जा रहे हैं, मरीजों की जांच हो रही है और दवाइयां बांटी जा रही हैं. कई लोगों का इलाज घर पर ही किया जा रहा है, जबकि गंभीर हालत वाले मरीजों को अस्पताल भेजा जा रहा है. एंबुलेंस और स्वास्थ्यकर्मियों की आवाजाही से लोगों को हालात की गंभीरता का अहसास हो रहा है.

स्थानीय सीमा काले का कहना है कि पानी का रंग और गंध पहले से बदली हुई लग रही थी, लेकिन किसी ने अंदाजा नहीं लगाया था कि हालात इतने बिगड़ जाएंगे. अब लोग एक दूसरे को उबला हुआ पानी पीने और बच्चों बुजुर्गों का खास ख्याल रखने की सलाह दे रहे हैं. नगर निगम की टीमें पानी की सप्लाई व्यवस्था की जांच में जुटी हैं. कुछ जगहों पर पाइप लाइन और टंकियों की सफाई का काम शुरू किया है. पानी के सैंपल जांच के लिए भेजे हैं. प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि जब तक स्थिति पूरी तरह सामान्य न हो, नल के पानी का सीधे उपयोग न करें. भागीरथपुरा में फिलहाल चिंता और इंतजार का माहौल है. हर कोई यही उम्मीद कर रहा है कि हालात जल्द सुधरें, पानी फिर से भरोसेमंद बने और इलाका बीमारी के साए से बाहर निकल सके.

विजयवर्गीय पहुंचे मरीजों को देखने

महापौर भी पहुंचे अस्पताल

भागीरथपुरा क्षेत्र में दूषित जल के कारण बीमार लोगों की जानकारी मिलने पर नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय अस्पताल में मरीजों का हाल जानने पहुंचे. इस दौरान भर्ती पीड़ित मरीजों से उन्होंने बीमार होने की जानकारी ली. साथ ही पूछा कि कितने समय से गंदा पानी आ रहा है. इसके बाद विजयवर्गीय ने अस्पताल में डॉक्टरों को इलाज में कोई कमी नहीं रखने के निर्देश दिए. इलाज का खर्च सरकार द्वारा वहन करने की बात कही.

महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने क्षेत्र का दौरा कर प्रभावित रहवासियों से मुलाकात की और उनकी कुशल-क्षेम पूछी. महापौर ने बताया कि प्रथम दृष्टया यह मामला बैक्टीरियल इन्फेक्शन का प्रतीत होता है, जिसके कारण क्षेत्र में कई लोगों को उल्टी-दस्त एवं लूज मोशन की शिकायत हुई है. महापौर ने बताया कि 70 से अधिक रहवासियों को अलग-अलग अस्पतालों में भर्ती कराया गया, जिनमें से 30-35 लोग उपचार के बाद स्वस्थ होकर घर लौट चुके हैं. शेष 30-35 लोग अस्पतालों में स्वास्थ्य लाभ ले रहे हैं. उन्होंने रात में अस्पताल पहुंचकर भर्ती मरीजों का हालचाल भी जाना तथा चकित्सकों से चर्चा की. डॉक्टरों के अनुसार, संक्रमण के कारण ही लोगों में उल्टी-दस्त की समस्या देखी जा रही है. महापौर ने बताया कि आज सुबह जल आपूर्ति के सभी सैंपल लिए गए हैं. रहवासियों के अनुसार संक्रमण गुरुवार और शुक्रवार के दौरान फैलना शुरू हुआ. निगम के संबंधित अधिकारियों को पानी के नमूने लेने और जांच करने की निर्देश दिए हैं.

शहर कांग्रेस अध्यक्ष एमवाय और वर्मा हॉस्पिटल पहुंचे

कल भागीरथपुरा में गंदे पानी से बीमार मरीजों का हाल जानने शहर कांग्रेस अध्यक्ष चिंटू चौकसे हॉस्पिटल पहुंचे. चौकसे ने पहले एमवाय में भर्ती मरीजों की सुध ली और फिर वर्मा यूनियन अस्पताल जाकर मरीजों के हाल जाने. चौकसे ने अस्पताल प्रबंधन से मरीजों को सही इलाज उपलब्ध कराने का कहा है. चौकसे ने आरोप लगाया कि महापौर और पूरी भाजपा भ्रष्टाचार में डूबे हुए हैं. जनता को कोई परवाह नहीं है. शिकायत के बावजूद ध्यान नहीं देना और विभागीय मंत्री कैलाश विजयवर्गीय के क्षेत्र में ऐसी स्थिति है. चार लोग मर चुके हैं और 7 सौ से ज्यादा बीमार है. यह शहर पर बहुत बड़ा दाग है. कांग्रेस की मांग है कि नर्मदा इंजीनियर को तत्काल प्रभाव से हटाया जाए. साथ ही मामले में शिकायत पर ध्यान नहीं देने और लापरवाही कहने वाले अधिकारी और कर्मचारियों पर कारवाई की जाए.

वार्ड में दर्द, आंखों में डर, हर मरीज की जुबां पर एक ही सवाल : कितनों को मारेगा यह पानी

इंदौर. परदेशीपुरा स्थित वर्मा नर्सिंग होम का माहौल सामान्य नहीं है. इमरजेंसी वार्ड से लेकर जनरल बेड तक मरीजों की कराह, परिजनों की बेचैनी और डॉक्टरों की भागदौड़ साफ बता रही है कि भागीरथपुरा से फैली बीमारी ने हालात किस कदर बिगाड़ दिए हैं. गंदे पानी से बीमार पड़े लोग यहां भर्ती हैं और हर मरीज की कहानी एक जैसी पीड़ा बयां कर रही है.

अस्पताल के एक बेड पर भर्ती जय कुमार शाक्य ने कमजोर आवाज में बताया कि सुबह से उल्टी दस्त थमने का नाम नहीं ले रहे. अब शरीर में बिल्कुल ताकत नहीं बची है. घर पर रोज नल का पानी पीते थे, उसी के बाद हालत बिगड़ गई. पास खड़े उनके बेटे ने बताया कि घर में तीन लोग बीमार हैं, लेकिन जय कुमार की हालत ज्यादा खराब होने पर उन्हें तुरंत वर्मा नर्सिंग होम लाया गया. महिला वार्ड में भर्ती प्रिया पाल दर्द से कराहती नजर आईं. उन्होंने बताया कि रात में अचानक पेट में तेज दर्द शुरू हुआ और फिर उल्टी दस्त होने लगे. पहले लगा कुछ गड़बड़ खा लिया होगा, लेकिन जब मोहल्ले में और लोग बीमार पड़े, तब समझ आया कि पानी ही वजह है. उनके साथ मौजूद रिश्तेदार कौशल्या कुशवाह ने कहा कि अब घर में किसी को भी नल का पानी नहीं पीने दिया जा रहा, उबालकर ही इस्तेमाल किया जा रहा है. बच्चों के वार्ड के बाहर खड़े दिलीप यादव की आंखों में डर साफ झलक रहा था. उन्होंने बताया कि उनके बेटे को दिन में कई बार उल्टी हुई. डॉक्टरों ने समय पर इलाज शुरू कर दिया, इसलिए अब हालत कुछ संभली है, लेकिन डर अब भी बना हुआ है. घर लौटकर पानी को लेकर सबसे ज्यादा चिंता है. इमरजेंसी के बाहर बैठे मनीष पवार ने बताया कि उनके परिवार में एक के बाद एक लोग बीमार पड़ने लगे. जब देखा कि पूरे इलाके में यही हाल है, तब समझ आया कि मामला सिर्फ हमारे घर का नहीं है. नल का पानी ही सबको बीमार कर रहा है. वहीं डॉक्टरों ने बताया कि वर्मा नर्सिंग होम में भर्ती अधिकतर मरीज उल्टी दस्त, डिहाइड्रेशन और तेज कमजोरी की शिकायत लेकर आ रहे हैं. समय पर इलाज मिलने से कई मरीजों की हालत में सुधार हुआ है, लेकिन नए मरीजों के आने का सिलसिला अब भी जारी है. नर्सिंग स्टाफ लगातार ड्रिप बदलने और दवाइयां देने में जुटा हुआ है. अस्पताल परिसर में मौजूद परिजन प्रशासन और नगर निगम की व्यवस्था पर सवाल उठा रहे हैं. उनका कहना है देश के सबसे साफ शहर में अगर ऐसा पानी आएगा, तो आम आदमी आखिर जाए तो जाए कहां.वर्मा नर्सिंग होम का यह दृश्य सिर्फ एक अस्पताल की तस्वीर नहीं है, बल्कि भागीरथपुरा और आसपास के इलाकों की उस सच्चाई को उजागर कर रहा है, जहां हर नल पर भरोसा टूट चुका है और हर घर बीमारी के साये में जी रहा है.

आयुक्त और महापौर के खिलाफ मुकदमा दर्ज हो : जीतू पटवारी

इंदौर. शहर के भागीरथपुरा क्षेत्र में दूषित पानी के कारण हुई मौत के मामले में मुकदमा दर्ज किया जाना चाहिए. यह बात प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने भागीरथपुरा क्षेत्र में दौरे के दौरान मीडिया से कही.

भागीरथपुरा में संक्रमित पानी पीने से चार लोगों की मौत हो गई और सैंकड़ों की संख्या में बीमार लोगों के जानकारी मिलते ही पटवारी इंदौर पहुंचे. प्रदेश अध्यक्ष पटवारी ने भागीरथपुरा पहुंचकर मृतकों के घर जाकर संवेदना व्यक्त की. साथ ही रहवासियों से दूषित पानी पीने और उससे बीमार एवं पीड़ितों के घर जाकर हाल जाने. इस दौरान प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने मीडिया से कहा कि मैंने शहर अध्यक्ष चिंटू चौकसे को निर्देश दिए है कि निगम आयुक्त दिलीप कुमार यादव और महापौर पुष्यमित्र भार्गव के खिलाफ मुकदमा दर्ज करवाए. महापौर और निगम आयुक्त दोनों मौत के जिम्मेदार है. पटवारी ने सवाल किया कि जलकर राशि बढ़ाकर 300 रुपए कर दी है. इसके बावजूद शहर में गंदा पानी सप्लाय हो रहा है और लोग बीमार हो रहे है. जब स्वच्छ जल नहीं दे सकते और 2200 करोड़ की योजनाओं को बात कर रहे है. सब झूठ है. शहर में जनता की सुरक्षा भी नहीं कर पा रहे है. शिकायतों का निराकरण नहीं हो रहा है और टैक्स बढ़ाए जा रहे है. शहर और जनता के साथ अन्याय है. पटवारी ने भागीरथपुरा में एक डेड बॉडी को लेकर कमिश्नर को कॉल किया कि गरीब आदमी के दाह संस्कार की व्यवस्था कीजिए. इसकी हालत देखिए, इतनी मानवीयता करें.

75 वार्डों में गंदे पानी का उल्लेख निगम ने किया था, लेकिन हुआ क्या?

अब सवाल यह है कि शहर में गंदे या दूषित पानी वितरण की समस्या नई नहीं है, बल्कि सालों पुरानी है, जिसका निराकरण नहीं किया जा रहा है. अब शहर के हालात इस कदर बिगड़ चुके है कि अधिकारी, जनप्रतिनिधियों के नियंत्रण से बाहर हो चुके है. इसका खामियाजा जनता को भुगतना पड़ रहा है. आखिर क्या कारण हो सकता है कि जनता और क्षेत्र के लोग नगर निगम अधिकारियों और पार्षदों को गंदे पानी आने या दूषित जल वितरित होने की शिकायत कर रहे हैं. मगर समस्या का निराकरण नहीं किया जा रहा है.

यहां एक बात याद आ रही है कि पिछले साल नगर निगम द्वारा ही शहर के 75 से अधिक वार्डो में नर्मदा जल वितरण में गंदा पानी होने की जानकारी दी गई थी. उसमे मोहल्ला और कॉलोनियों के साथ वार्ड एवं झोन का उल्लेख भी किया गया था. इतने गंभीर मामले पर भी नगर निगम के अधिकारियों की नींद नही खुली. इससे बढ़कर निगम पर काबिज भाजपा के सांसद, महापौर, विधायक और पार्षदों का गंदे पानी की समय को दरकिनार करना क्या माना जाए? ऐसा तो है नहीं कि जनप्रतिनिधियों को जानकारी नहीं है? जानकारी अधिकारियों से लेकर पार्षद तक सबको होती है, लेकिन भ्रष्टाचार में उलझे हुए रहने से अधिकारी नेताओं पर हावी हो चुके हैं. यही कारण है कि महापौर की विधानसभा वार पार्षदों के बैठक में अधिकारियों के नहीं सुनने की बात सामने आई. कई पार्षद अधिकारियों के नाम का रोना रोते नजर आए. मुद्दा यह है कि देश के आठ बार के स्वच्छ शहर में वर्षो से नर्मदा जल में गंदा पानी सप्लाय हो रहा है। विकास का ढिंढोरा पीटा जाता है, पूरे शहर में उखाड़ पछाड़ मची हुई है. हजारों करोड़ रुपए के लागत से अमृत योजना में पानी सप्लाई करने पर खर्च हो रहा है, लेकिन नर्मदा पीने के पानी में दूषित और गंदा पानी आना बंद करने की कोई कोशिश और योजना नहीं बनी है. ऐसा कहा जा सकता है कि यदि शहर में नर्मदा पानी में गंदा इसी तरह मिलता रहा तो आने वाले दिनों और कुछ महीनों में शहर दूषित जल जनित बीमारी पीलिया, टायफाइड, डायरिया , डिहाइड्रेशन के कारण मृत्यु जैसी घातक स्थिति उत्पन्न होगी. समय रहते यदि दूषित पानी वितरण की समस्या का हल या निराकरण नहीं हुआ तो विकास एक तरफ रह जाएगा. इंदौर बीमारी जनित शहर के रूप में पहचान बना लेगा.

स्वच्छता के दावे पर लगा दाग

देश के सबसे स्वच्छ शहर के दावों पर भागीरथपुरा की घटना ने गहरा सवाल खड़ा कर दिया है. गंदे और दूषित पानी से फैली उल्टी दस्त की बीमारी ने अब तक चार लोगों की जान ले ली, जबकि अनेकों लोग बीमार पड़े. एक ओर स्वच्छता रैंकिंग का ताज है, तो दूसरी ओर नलों से आ रहा ऐसा पानी, जो लोगों की जिंदगी पर भारी पड़ रहा है. हालात की गंभीरता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग को ताबड़तोड़ सर्वे और जांच अभियान चलाना पड़ा. प्रभावित इलाके में 2703 घरों का सर्वे किया. इस दौरान 1200 से ज्यादा लोगों की स्वास्थ्य जांच हुई. इनमें से 1174 लोगों का इलाज घर पर ही किया, जबकि 111 मरीजों को अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा. इलाज के बाद 18 मरीज स्वस्थ होकर घर लौट चुके हैं, जबकि बाकी का इलाज जारी है. बीमारी की चपेट में आए लोगों में उल्टी, दस्त, पेट दर्द और तेज कमजोरी जैसे लक्षण सामने आए. कई परिवारों में एक एक से ज्यादा सदस्य बीमार पड़े, जिससे इलाके में दहशत का माहौल बन गया. हालात तब और गंभीर हो गए जब इलाज के दौरान चार मौतों की पुष्टि हुई. प्रशासनिक स्तर पर शुरुआती जांच में आशंका जताई जा रही है कि पानी की सप्लाई लाइन में गड़बड़ी, टंकी के दूषित होने या आसपास चल रही खुदाई के कारण साफ पानी में गंदगी मिल गई. पानी के सैंपल जांच के लिए भेजे गए हैं और रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की बात कही जा रही है. घटना ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि स्वच्छता की रैंकिंग क्या सिर्फ आंकड़ों तक सीमित है, या ज़मीनी हकीकत भी उतनी ही साफ है. देश के सबसे साफ शहर में गंदे पानी से हुई मौतों ने सिस्टम की लापरवाही और निगरानी तंत्र की पोल खोल दी है

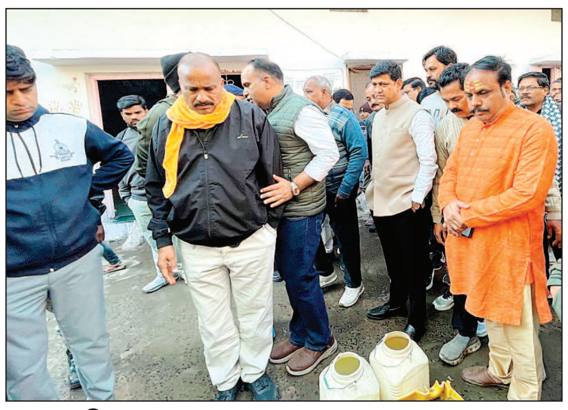

भागीरथपुरा पहुंचे निगम आयुक्त अधिकारियों को दिए निर्देश

गंदे पानी से सैंकड़ों लोगों के बीमार पड़ने के बाद नगर निगम आयुक्त दिलीप कुमार यादव ने भागीरथपुरा पहुंचकर मौका मुआयना किया. इसके बाद आयुक्त यादव ने अपर आयुक्त रोहित सिसोनिया और पीएचई अधिकारी संजीव श्रीवास्तव के साथ अधिकारियों की बैठक ली.

आयुक्त ने जलप्रदाय करने वाली लाइन चेक, मेपिंग कर जल वितरण लाइन की जांच, क्षेत्र में टैंकरों से जलप्रदाय और विशेष सफाई अभियान चलाने के निर्देश दिए हैं. साथ ही अधिकारियों से क्षेत्र में लगातार उद्घोषणा करने का कहा है. आयुक्त यादव ने अधिकारियो से कहा कि जब तक जांच रिपोर्ट नहीं आती और कारण पता नहीं चल जाता है, तब तक जल वितरण टैंकरों से हो. टैंकरों की भी सफाई जांच की जाए, ताकि टैंकरों से शुद्ध जल वितरण हो.

कलेक्टर के स्वास्थ्य विभाग को निर्देश -इंदौर. कलेक्टर शिवम वर्मा ने बताया कि जिला प्रशासन द्वारा सतत निगरानी रखी जा रही है. स्वास्थ्य विभाग को उपचार की नियमित समीक्षा करने के निर्देश भी दिए गए हैं. मुख्यमंत्री के निर्देशों के बाद इंदौर प्रशासन और स्वास्थ्य अमला पूरी तत्परता के साथ उपचार में जुटा हुआ है.

अनदेखी ▶ 'नवभारत' द्वारा कई बार प्रशासन और जिम्मेदारों को इस संबंध में अवगत कराया, लेकिन उनके कानों पर जूं तक रेंगी

भागीरथपुरा ही नहीं, पूरे शहर की जल और सीवरेज व्यवस्था पर गंभीर सवाल

इंदौर. शहर के भागीरथपुरा क्षेत्र में दूषित पानी की सप्लाई से चार लोगों की मौत और कई के बीमार होने की घटना ने पूरे शहर में दहशत फैला दी है. यह हादसा केवल एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि शहर की पूरी जल सप्लाई और सीवरेज व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े करता है.

गौरतलब है कि सीवरेज लाइनों की जर्जर हालत, बार-बार ओवरफ्लो और पीने के पानी में गंदगी मिलने की आशंका को लेकर पिछले वर्षों में 'नवभारत' द्वारा कई बार खबरें प्रकाशित कर प्रशासन और संबंधित अधिकारियों को मामले से अवगत कराया जाता रहा है. इसके बावजूद न तो समय रहते ठोस सुधार किए गए और न ही स्थायी समाधान निकाला गया. भागीरथपुरा की घटना के बाद शहर के अन्य इलाकों में भी लोग पीने के पानी को लेकर आशंकित हैं. कई क्षेत्रों में लोग उबला या दवा डालकर पानी उपयोग करने को मजबूर हैं, वहीं अस्पतालों में पेट संबंधी बीमारियों के मरीज बढ़ रहे हैं. सवाल यह है कि जब जानकारियां पहले से मौजूद थीं तो प्रशासन ने समय रहते कार्रवाई क्यों नहीं की? अब जनता की मांग है कि पूरे मामले की निष्पक्ष जांच बैठाई जाए और दोषियों पर सख्त कार्रवाई कर शहरवासियों को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराया जाए.

यह बोले शहरवासी...

भागीरथपुरा की घटना के बाद आसपास के क्षेत्र के लोग दहशत में हैं. लोग पीने का पानी टैंकर से नहीं ले रहे हैं. सुबह से लेकर शाम तक पानी के भरे हुए टैंकर खड़े रहे.

- नवीन कुमार बेनवाल, परदेसीपुरा

सीवरेज का गंदा पानी पेयजल की पाइप लाइन में मिक्स होकर घरों तक पहुंचता है. यह आम बात है, जिसकी शिकायत करने के बावजूद कोई निराकरण नहीं हो पाता है. मजबूरन लोगों को वही पानी पीना पड़ता है.

- अंकित मगरे, संयोगितागंज

घटना बड़ी दु:खद है. घटना होने के बाद ही शासन-प्रशासन क्यों जागता है. पहले से उसको दुरुस्त कर देना चाहिए था, ताकि कोई जनहानि ना हो सके. अब जो हुआ, उसका जिम्मेदार कौन?

- रेहान खान, खजराना

युवक कांग्रेस ने महापौर सचिवालय का घेराव कर नारेबाजी की

इंदौर. भागीरथपुरा में दूषित जल वितरण से चार लोगों की मौत और अनेकों लोगों के बीमार होने के विरोध में युवक कांग्रेस ने महापौर सचिवालय का घेराव कर नारेबाजी की. इस दौरान महापौर सचिवालय में मौजूद थे. युवक कांग्रेस की महापौर से मांग थी कि दोषी निगम अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करें.

युवक कांग्रेस ने आरोप लगाया कि महापौर पुष्यमित्र भार्गव चाय पर चर्चा का कार्यक्रम कर रहे थे. दूसरी तरफ कम से कम 2-3 लोगों की जान जा चुकी है. यूथ कांग्रेस अध्यक्ष अमित पटेल ने कहा कि चर्चा करना है तो चाय पर नहीं, गंदे पानी पर करें! नगर निगम अफसरों की घोर लापरवाही के कारण शहर में ऐसे हालात बने है. महापौर सचिवालय घेराव के दौरान शिवि चौहान, स्वप्निल कामले, सरफराज अंसारी, निलेश सेन, दानिश खान, चेतन चौधरी, शादाब खान,हर्ष डांगरे, शांतनु लाहिया, आकाश निज़ामपुरकर, प्रतीक मित्तल , सावन भाई, वैभव भाई एवं बड़ी संख्या में यूथ कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद थे.